

VI. मूल्य स्थिति

वार्षिक नीतिगत वक्तव्य में किये गये अनुमान के अनुसार 2011-12 की ति1 में मुद्रास्फीति उच्च बनी रही। जून 2011 में ईंधन के मूल्य में किये गये संशोधन से मुद्रास्फीति के अनुमानित पथ पर प्रभाव पड़ा जो कि जिससे दबी हुई मुद्रास्फीति जोखिम कम होती है किंतु पूरी तरह से समाप्त नहीं हो जाती। अंतरराष्ट्रीय पण्यों के मूल्यों में कमी आने से अल्पावधि में कुछ राहत मिल सकती है। किंतु लगभग सामान्य रहे मानसून का खाद्य मुद्रास्फीति पर अनुकूल प्रभाव न्यूनतम समर्थक मूल्यों में वृद्धि से कम हो सकता है। खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति लगभग 4 प्रतिशत के दीर्घावधि औसत से काफी अधिक बनी रही जो कि मूल्यन प्रभाव की निरंतरता दर्शाती है। आपूर्ति पक्षीय कारकों के अलावा मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने के लिए मांग के दबाव में कमी आना आवश्यक है। मूल्य-दबाव ति2 में भी बने रहने की संभावना है जिनमें 2011-12 के उत्तरार्ध में कमी आयेगी।

मुद्रास्फीति में अल्पकालिक ऊर्ध्वमुखी जोखिम काफी बनी रही

VI.1 2011-12 की ति1 के दौरान स्फीतिकारी दबाव बने रहे (9.4 प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष, जून 2011 में अनंतिम) जो कि वैश्विक पण्य मूल्यों का देशी मुद्रास्फीति में अंतरण और साथ ही निविष्टि लागत के दबावों की निरंतरता के कारण विनिर्मित उत्पादों के मूल्यों में वृद्धि दर्शाते हैं। मजबूत उपभोग मांग के बीच उत्पादक उच्च लागत को अंतरित करने में समर्थ थे। वैश्विक पण्य मूल्यों में हाल की अवधि में कुछ कमी आयी। किंतु ईंधन के मूल्यों को उस समय पहले नहीं बढ़ाने, जब वैश्विक मूल्यों में तेज वृद्धि हुई थी, के कारण ईंधन के मूल्यों में वृद्धि अनिवार्य हो गयी थी जिसे 25 जून 2011 को लागू किया गया। इस संशोधन के बाद भी पास-थू अधूरा है और वर्ष के दौरान ऊर्ध्वमुखी जोखिम का स्रोत बना हुआ है।

VI.2 अन्य अनेक पण्यों के लिए पास-थू अधूरा बना हुआ है जिससे वैश्विक मूल्यों में कमी के अनुरूप देशी मूल्यों में भी कमी आने की संभावना सीमित हो जाती है। दूसरी ओर, वैश्विक पण्य मूल्यों में पुनः वृद्धि होगी तो इससे देशी मूल्यों पर दबाव बढ़ेगा। प्रत्येक स्थिति में, स्थिर नियंत्रित मूल्य राजकोषीय जोखिम बढ़ाते हैं क्योंकि उनमें अधिक सब्सिडी की आवश्यकता होती है। मध्यावधि से दीर्घावधि में यह मुद्रास्फीति का स्रोत भी होते हैं क्योंकि इनसे ब्याज दर अधिक रहते हैं जिससे निवेश प्रभावित होकर आपूर्ति प्रतिसाद मंद हो जाते हैं। वर्ष के

दौरान संभाव्य मूल्य दबाव के अन्य स्रोत भी हैं। उपयोगिता मूल्य, विशेष रूप से बिजली संबंधी, को संशोधित करने की आवश्यकता होगी ताकि लागत को कवर किया जा सके। देशी उर्वरक मूल्य आयातित उर्वरक और उर्वरक निविष्टियों के उच्च मूल्यों से अभी भी भिन्न हैं। नियंत्रित मूल्यों में अधिक विवेकाधीन परिवर्तन मुद्रास्फीति आशंकाओं को भी प्रभावित करता है।

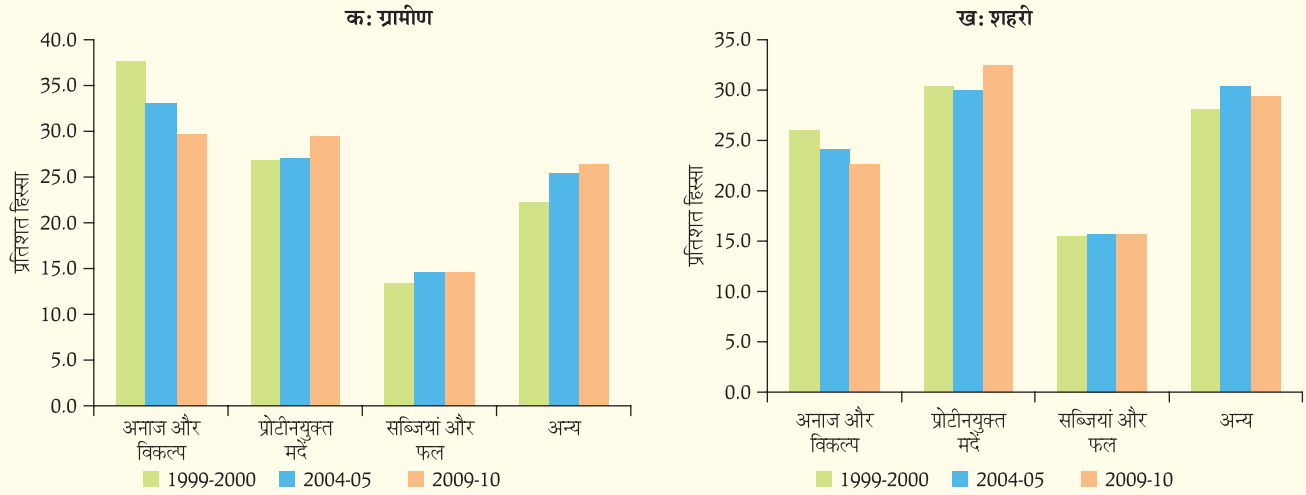
VI.3 प्राथमिक खाद्य मदों संबंधी मुद्रास्फीति 2010-11 की ति1 के 20 प्रतिशत से अधिक के स्तर से कम होकर 2011-12 की ति1 में 9.1 प्रतिशत रह गयी जो कि मुख्यतः आधार प्रभाव दर्शाती है क्योंकि विशेष रूप से प्रोटीनयुक्त मदों में मुद्रास्फीति का संरचनात्मक लक्षण दर्शाते हुए सूचकांक का स्तर निरंतर बढ़ता रहा। एनएसएसओ पंचवर्षीय उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण (2009-10) से प्राप्त अद्यतन आंकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में खानपान में प्रोटीन की मदों का उपयोग बढ़ा है। हाल के वर्षों में देखे अनुसार आपूर्ति प्रतिसाद की अनुपस्थिति में इन मदों में मूल्य दबाव निरंतर बना रह सकता है (चार्ट VI.1)। न्यूनतम समर्थन मूल्यों (एमएसपी) में संशोधन से भी नया दबाव आ सकता है। खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति अपने ऐतिहासिक औसत की तुलना में काफी अधिक स्तर पर बनी रही और यह आगे भी बनी रह सकती है क्योंकि लागत दबाव और मूल्यन शक्ति काफी बनी हुई है।

नियंत्रित मूल्यों में संशोधन और स्वतंत्र रूप से मूल्यित ईंधन उत्पादों में वृद्धि से ईंधन मुद्रास्फीति अधिक बनी रही

VI.4 इस रिपोर्ट में दर्शायी गयी पिछली तिमाही की मुद्रास्फीति की दबी हुई चिंता कुछ कम हुई किंतु यह मूल्य समायोजन भारतीय अर्थव्यवस्था की समष्टिआर्थिक स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल के मूल्यों का देशी मुद्रास्फीति में पास-थू हाल के समय में महत्वपूर्ण रहा है जिसमें स्वतंत्र रूप से मूल्यित श्रेणी की अधिकतर मदों में वृद्धि हुई (चार्ट VI.2)। अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल के मूल्यों में हाल की अवधि में कुछ कमी आने के बावजूद वे पिछले वर्ष की तुलना में अधिक थे।

VI.5 ईंधन उत्पादों के देशी नियंत्रित मूल्य एक वर्ष तक अपरिवर्तित रखने के कारण वसूली की मात्रा कम हो गयी जिससे राजकोषीय

चार्ट VI.1: खाद्य उपभोग की बदलती संरचना



टिप्पणी: प्रोटीनयुक्त मर्दों में दलहन, दूध तथा उत्पाद, अंडे, मछली तथा मांस शामिल है। अन्य में खाद्य तेल, चीनी, नमक तथा मसाले, पेय आदि शामिल हैं।

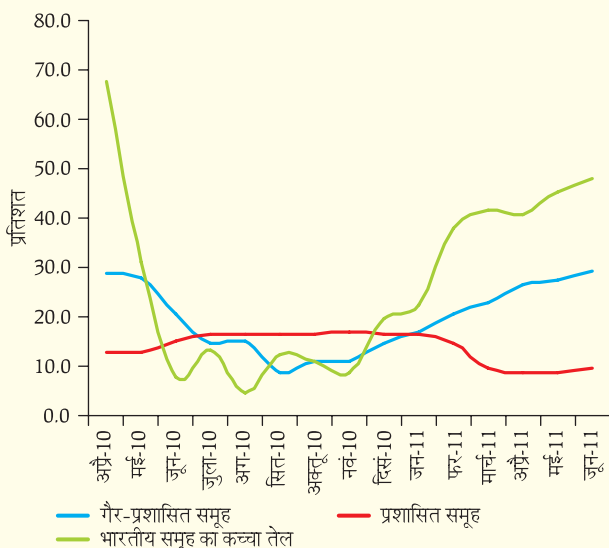
स्रोत: एनएसएसओ, भारत में हाउसहोल्ड उपभोक्ता व्यय के संकेतक 2009-10.

भार में तदनुरूप वृद्धि हुई। कम वसूली के मामले को सुलझाने के लिए सरकार ने 25 जून 2011 को डीजेल के मूल्य में 3 रुपये प्रति लिटर, पीडीएस केरोसीन में 2 रुपये प्रति लिटर और देशी एलपीजी में 50 रुपये प्रति सिलेंडर वृद्धि करने तथा उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क कम करने का निर्णय लिया। डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति पर इस वृद्धि का सीधा प्रभाव 0.7 प्रतिशत अंक था। मासिक डब्ल्यूपीआई साप्ताहिक औसत होने के कारण डब्ल्यूपीआई में इस वृद्धि का पूरा प्रभाव जुलाई 2011 में दिखेगा क्योंकि मूल्य संशोधन जून 2011 में किया गया था।

मुद्रास्फीति अब भी लागत वृद्धि और मांग पक्षीय दबावों से प्रेरित है

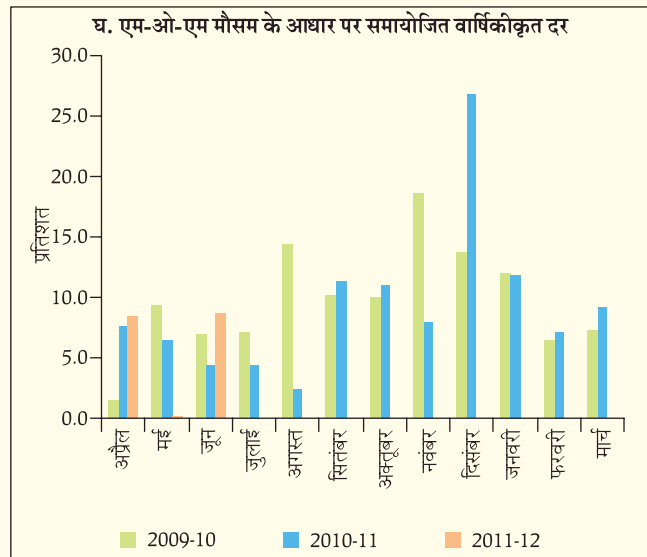
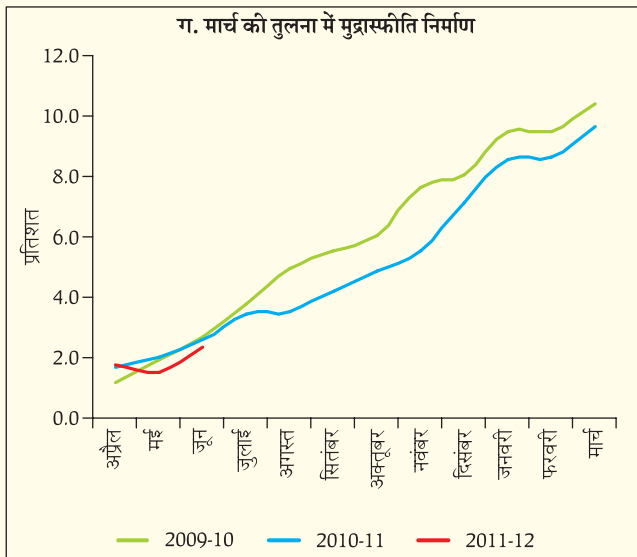
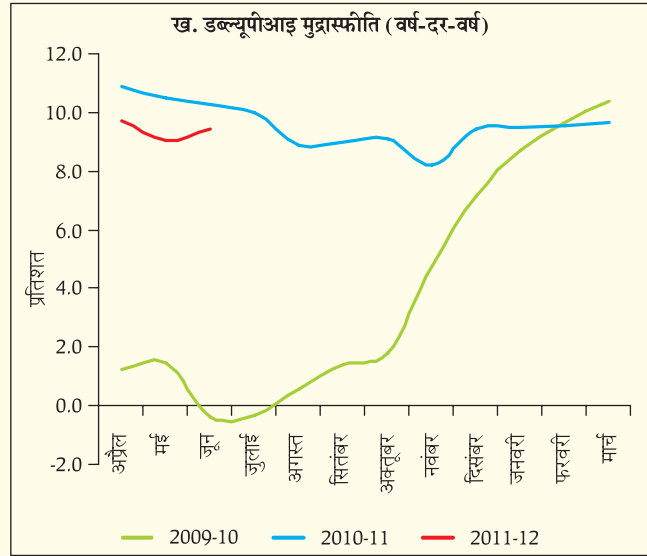
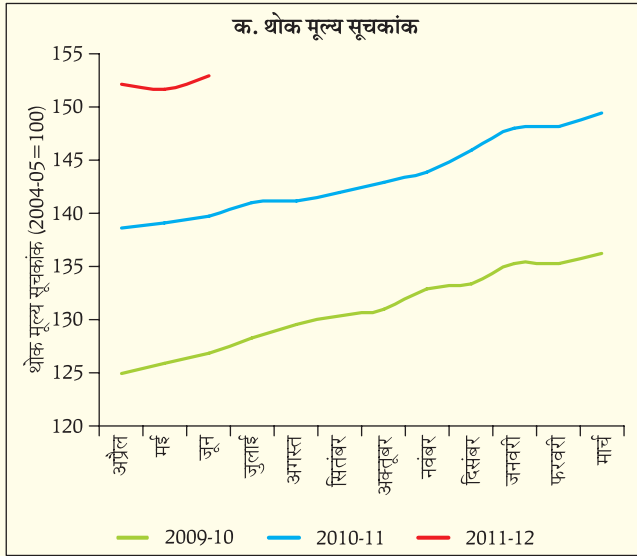
VI.6 लागत वृद्धि और मांग पक्षीय कारकों से खाद्येतर विनिर्माण पण्यों के मूल्यों में काफी परिवर्तन होने से मुद्रास्फीति बढ़ने की स्थिति 2011-12 की ति1 तक रही। उच्च आधार के कारण अप्रैल 2011 में वर्ष-दर-वर्ष डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति कुछ कम होने के बावजूद डब्ल्यूपीआई ने 2011-12 में अब तक अपनी वृद्धि जारी रखी। मई और जून 2011 में मुद्रास्फीति बढ़ गयी जो कि मूल्य दबावों की निरंतरता दर्शाती है। इसके साथ माह-दर-माह मौसमी समायोजित परिवर्तन भी हुए जो कि हाल की अवधि में काफी सकारात्मक बने रहे (चार्ट VI.3)। डब्ल्यूपीआई में माह-दर-माह दर परिवर्तनों से पता चलता है कि मूल्य दबावों की स्थिति में कुछ महीनों में काफी अंतर आया किंतु ये प्रत्येक दूसरे माह में सकारात्मक बने रहे।

चार्ट VI.2: वैश्विक और देशी ईंधन मुद्रास्फीति (वर्ष-दर-वर्ष)



VI.7 महत्वपूर्ण रूप से, डब्ल्यूपीआई में वृद्धि के निहित प्रेरकों में मार्च 2010 से तीन चरणों में काफी परिवर्तन हुआ है। दिसंबर 2010 से हुई मूल्य वृद्धि स्फीतिकारी दबावों में विस्तार होना और खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति का मुख्य योगदान दर्शाती है (चार्ट VI.4)। प्रथम चरण में (अप्रैल और जुलाई 2010 के बीच) डब्ल्यूपीआई में वृद्धि सर्वाधिक योगदान खाद्य समूह का था। दूसरे चरण में (अगस्त और नवंबर 2010 के बीच) प्राथमिक खाद्येतर मर्दों, विशेष रूप से कच्ची कपास, कच्चा जूट और कच्ची रेशम

चार्ट VI.3: थोक मूल्य मुद्रास्फीति की प्रवृत्तियां



जैसे रेशों का योगदान प्रमुख था। यह भी उल्लेखनीय है कि डब्ल्यूपीआई में समग्र वृद्धि में खाद्य समूह का योगदान बाद के चरणों में कम हो गया।

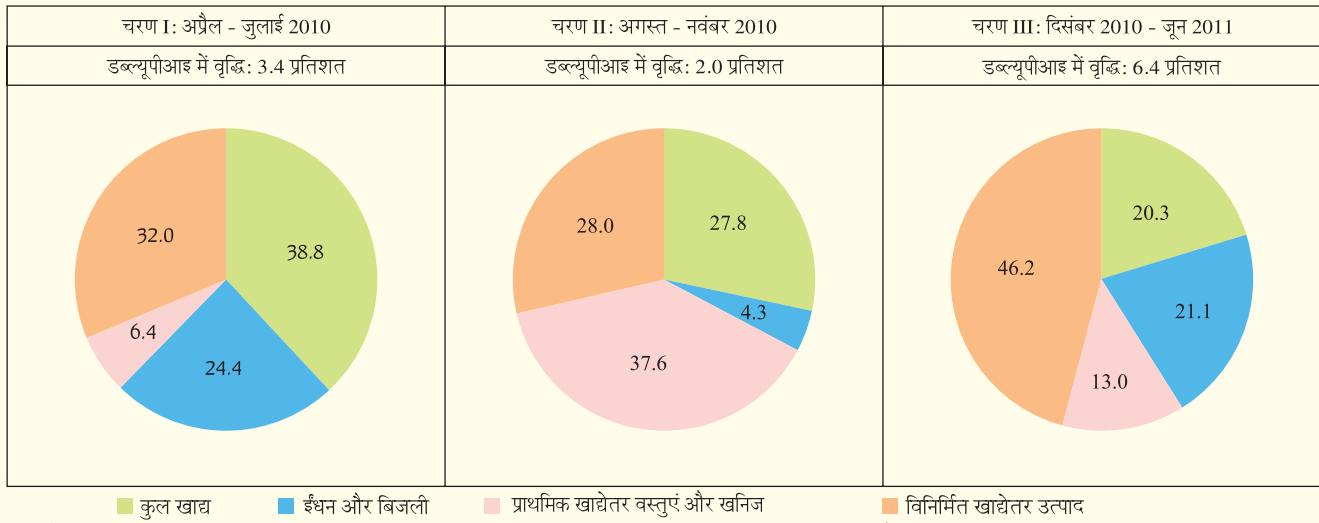
मुद्रास्फीति संबंधी चिंताओं में खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति प्रमुख है

VI.8 खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति दिसंबर 2010 से काफी बढ़ जाने का मुख्य कारण निविष्टि लागत दबावों का उत्पादन मूल्यों में पास-थू था। मांग दबावों की अनुपस्थिति में मुद्रास्फीति के विस्तार की प्रक्रिया बाद के महीनों में जारी नहीं रही होती। उच्च माह-दर-माह मौसमी रूप से समायोजित मुद्रास्फीति से

पता चलता है कि मूल्य दबाव लगभग निरंतर बना रहा है (चार्ट VI.5)।

VI.9 खाद्येतर विनिर्मित उत्पादों में वृद्धि में मुख्य योगदान वस्त्र, रसायन और धातुओं का था (चार्ट VI.6)। इन उत्पादों के लिए निविष्टि लागत दबाव महत्वपूर्ण रहे हैं। अतः खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति में किसी भी कमी के लिए निविष्टि लागत पक्ष और साथ ही मांग की ओर के दबाव कम होना आवश्यक होगा। विद्युत मूल्य मुद्रास्फीति कम बनी हुई है किंतु कोयले और खनीज तेल के मूल्यों में हुई वृद्धि के कारण विद्युत के मूल्य अल्पावधि संदर्भ में बढ़ने की संभावना है।

चार्ट VI.4: डब्ल्यूपीआइ में वृद्धि के लिए भारांकित योगदान में परिवर्तन



टिप्पणी: पाई चार्ट डब्ल्यूपीआइ (पूर्णांकन के लिए समायोजित) में वृद्धि के लिए विभिन्न उप समूहों के अंशदान (प्रतिशत) दर्शाता है।

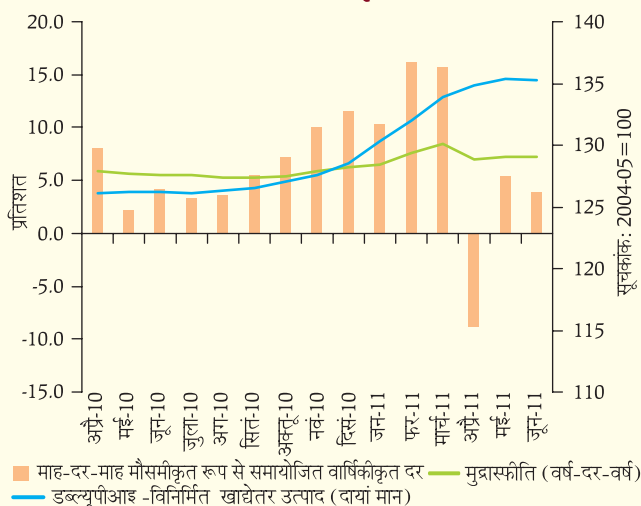
उन्नत देशों की मुद्रास्फीति ने वैश्विक मुद्रास्फीति की गतिशीलता परिवर्तित कर दी

VI.10 हाल के महीनों में वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति प्रमुख नीतिगत चिंता के रूप में उभरी है क्योंकि पण्य मूल्यों में वृद्धि का विस्तार हेडलाइन मुद्रास्फीति तक हो गया। आईएमएफ के वैश्विक आर्थिक आउटलुक अपडेट (जून 2011) में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के लिए 2011 का मुद्रास्फीति अनुमान अप्रैल 2011 में पहले अनुमानित 2.2 प्रतिशत से बढ़ाकर 2.6 प्रतिशत किया है जबकि उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए इसे 6.9 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखा गया है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में कोर मुद्रास्फीति कम बनी रहने के बावजूद,

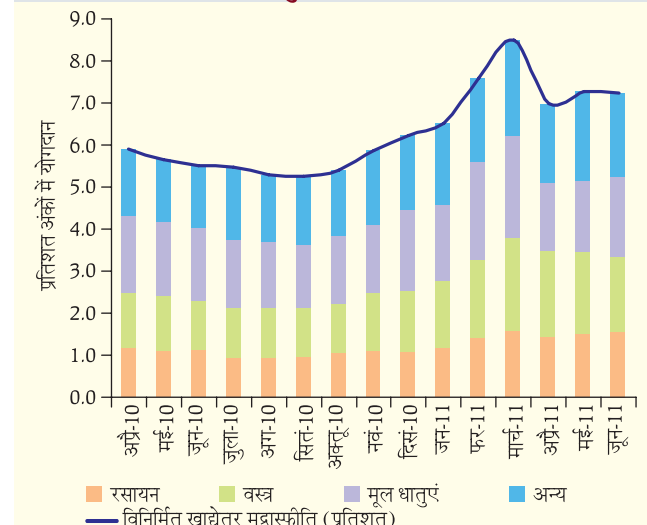
जो कि देशी मांग से अधिक दबाव न होना दर्शाती है, मुद्रास्फीति को लक्ष्य बनाने वाली अधिकतर अर्थव्यवस्थाओं में हेडलाइन मुद्रास्फीति लक्ष्यित स्तर से अधिक हो गयी। उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच मुद्रास्फीति में अंतर का कारण ईएमई में कुल उपभोग समूह में खाद्य और ईंधन का हिस्सा अधिक होना और तेज सुधार के कारण मांग में उछाल आना था। ईएमई में इकाई श्रम लागत में वृद्धि को वैश्विक मूल्य स्थिरता के लिए जोखिम के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि आपूर्ति श्रृंखला का अंतरराष्ट्रीयकरण बढ़ रहा है।

VI.11 कोर मुद्रास्फीति में कुछ कमी आने से उन्नत अर्थव्यवस्थाओं को निभावी मौद्रिक नीति जारी रखने का सहारा मिल गया। किंतु

चार्ट VI.5: विनिर्मित खाद्येतर उत्पाद: सूचकांक, मुद्रास्फीति और माह दर माह मौसमी रूप से समायोजित वार्षिकीकृत परिवर्तन



चार्ट VI.6: खाद्येतर विनिर्माण उत्पाद मुद्रास्फीति में मुख्य योगदान



बीआईएस ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में सावधान किया है कि वैश्विक आर्थिक मंदी सामान्य अनुमान से कम हो सकती है जिससे वैश्विक सुधार क्षमता बाधाओं के कारण स्फीतिकारी दबाव उभर सकते हैं। निभावी मौद्रिक नीति की स्थिति में पण्य मूल्य दबाव बढ़ने की जोखिम होती है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के अधिकतर केंद्रीय बैंकों ने नीतिगत दर को शून्य के करीब/न्यूनतम स्तर पर रखना जारी रखा जबकि उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने स्फीतिकारी दबाव को नियंत्रित रखने के लिए मौद्रिक नीति को क्रमिक रूप से कड़ा किया (सारणी VI.1)।

वैश्विक वृद्धि में कमी आने से पण्य मूल्यों में कमी आयी किंतु इसकी निरंतरता संदिग्ध है

VI.12 वैश्विक पण्य मूल्यों में 2011-12 की ति1 में कुछ कमी आयी जिसका मुख्य कारण आपूर्ति संभावना में सुधार तथा वित्तीय निवेशकों द्वारा पण्य भावी सौदा बाजार में अधिक निवेश करना

था। 28 अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा संस्था (आईईए) सदस्य देश जुलाई 2011 में 60 मिलियन बैरल तेल का निर्गम करने के लिए सहमत होने के कारण कच्चे तेल के मूल्यों में कमी आयी (चार्ट VI.7)। अनेक देशों द्वारा व्यापार नियंत्रण हटाने और उच्च मूल्यों के प्रति आपूर्ति प्रतिसाद अच्छा रहने की संभावना के चलते खाद्य मूल्यों में भी कुछ कमी आयी। फिर भी मूल्य काफी अधिक बने रहने की संभावना है।

VI.13 अनेक प्रमुख पण्यों में कम होते स्टॉक से पता चलता है कि हाल में मूल्यों में देखी गयी कमी अधिक समय तक नहीं बनी रहेगी। एफएओ-ओईसीडी कृषि आउटलुक 2011-12 के अनुसार अल्पावधि आपूर्ति प्रतिसाद मूल्य दबाव को कुछ समय के लिए कम कर सकता है किंतु खाद्य मूल्य " ... सांकेतिक और वास्तविक संदर्भ में पिछले दशक की तुलना में औसतन अधिक रहने की संभावना है।" बढ़ती आय, अधिक प्रोटीनयुक्त मदों की ओर बढ़ता रुझान और साथ ही

सारणी VI.1: वैश्विक मुद्रास्फीति संकेतक

(प्रतिशत)

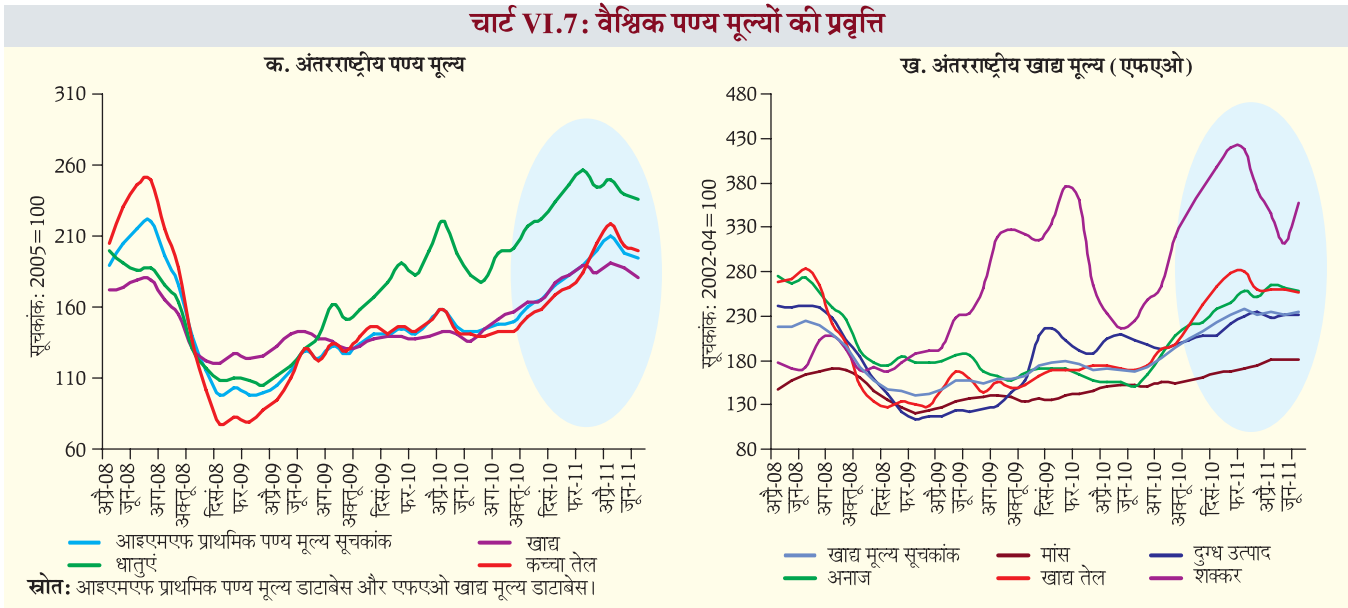
देश/क्षेत्र	मुख्य नीतिगत दर	नीतिगत दर (22 जुलाई 2011 को)	नीतिगत दर में परिवर्तन (आधार अंक)		सीपीआई मुद्रास्फीति (वर्ष - दर - वर्ष)	
			15 सितं. 08 से 23 अग. 09	23 अगस्त 09 से	जून-10	जून-11
1	2	3	4	5	6	7
विकसित अर्थव्यवस्थाएं						
ऑस्ट्रेलिया	नकदी दर	4.75 (नव. 3, 2010)	(-) 400	175	2.9 [^]	3.3 [^]
कनाडा	एक दिवसीय दर	1.00 (सितं. 8, 2010)	(-) 275	75	1.0	3.1
यूरो क्षेत्र	मुख्य पुनर्वित्त परिचालनों पर ब्याज दर	1.50 (जुला. 13, 2011)	(-) 325	50	1.5	2.7
जापान	असंपाशिविकृत एक दिवसीय मांग दर#	0.0 to 0.10 (अक्तू. 5, 2010)	(-) 40	(-) 10	-0.7*	0.3*
यूके	सरकारी बैंक दर	0.50 (मार्च 5, 2009)	(-) 450	0	3.2	4.2
अमरीका	फेडरल फंड दर#	0.0 to 0.25 (दिसं. 16, 2008)	(-) 200	0	1.1	3.6
विकासशील अर्थव्यवस्थाएं						
ब्राजील	सेलिक दर	12.50 (जुला. 21, 2011)	(-) 500	375	4.8	6.7
भारत	रिपो दर	7.50 (जून 16, 2011)	(-) 425	275	13.9*	8.7*
			(-400)	(100)		
चीन	बेंचमार्क 1 वार्षिक जमा दर	3.50 (जुला. 7, 2011)	(-) 214	125	2.9	6.4
	बेंचमार्क 1 वार्षिक उधार दर	6.56 (जुला. 7, 2011)	(-) 241	125		
			(-200)	(600)		
इंडोनेशिया	बीआइ दर	6.75 (फर. 4, 2011)	(-) 275	25	5.0	5.5
इजरायल	मुख्य दर	3.25 (जून 1, 2011)	(-) 375	275	2.4	4.2
कोरिया	आधार दर	3.25 (जून 10, 2011)	(-) 325	125	2.6	4.4
फिलीपीन्स	रिवर्स रिपो दर	4.50 (मई 5, 2011)	(-) 200	50	3.6	5.2
	रिपो दर	6.50 (मई 5, 2011)	(-) 200	50		
रूस	पुनर्वित्त दर	8.25 (मई 3, 2011)	(-) 25	(-) 250	5.8*	9.6*
दक्षिण अफ्रिका	रिपो दर	5.50 (नव. 19, 2010)	(-) 500	(-) 150	4.2	5.0
थाइलैंड	1 दिवसीय पुनर्खरीद दर	3.25 (जुला. 13, 2011)	(-) 250	200	3.3	4.1

[^] : 2010-11 की ति4. # : न्यूनतम लक्ष्य दायरे की दृष्टि से परिवर्तन का हिसाब किया गया। *: मई.

- टिप्पणी:** 1. भारत के लिए मुद्रास्फीति के आंकड़े औद्योगिक कामगारों की सीपीआई के हैं।
2. स्तंभ (3) के कोष्ठकों के आंकड़े प्रभावी दिनांक दर्शाते हैं जब नीतिगत दरें अंतिम बार संशोधित की गयीं।
3. स्तंभ (4 और 5) के कोष्ठकों के आंकड़े अवधि के दौरान सीआरआर में अंतर दर्शाते हैं।

स्रोत: संबंधित केंद्रीय बैंकों / संख्याओं की वेबसाइटें।

चार्ट VI.7: वैश्विक पण्य मूल्यों की प्रवृत्ति



ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत के रूप में जैव ईंधन का बढ़ता आकर्षण बाजार को कड़ा कर सकता है।

खाद्य मुद्रास्फीति में काफी कमी आयी किंतु मौसमी और संरचनात्मक कारक अब भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं

VI.14 प्राथमिक खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति में पिछले कुछ महीनों में काफी कमी आयी जिसका अपवाद दिसंबर 2010-जनवरी 2011 का समय था जब प्रवृत्ति में अस्थायी परिवर्तन हुआ था (चार्ट VI.8)। किंतु यह गिरावट इनती पर्याप्त नहीं थी जो खाद्य मुद्रास्फीति की चिंताओं को कम कर देती। इसके अलावा, यह मुख्यतः आधार प्रभाव दर्शाती

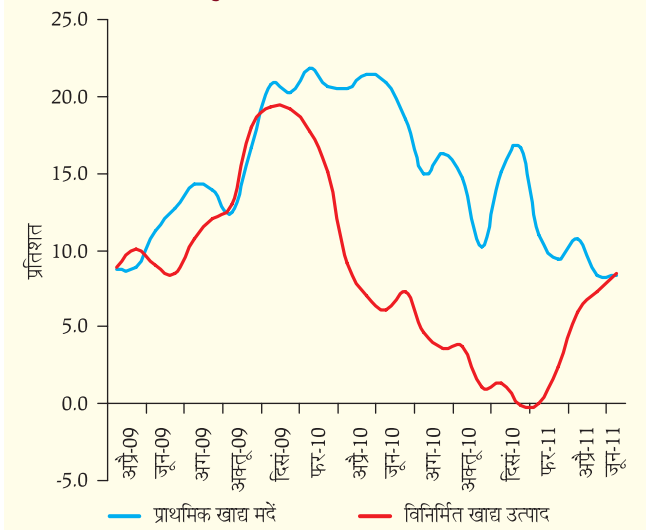
है क्योंकि खाद्य मूल्यों का स्तर निरंतर उंचा बना रहा (चार्ट VI.9)। साथ ही, विनिर्मित खाद्य उत्पाद मुद्रास्फीति, जो कि 2010-11 कर दौरान काफी कम हो गयी थी, में हाल के महीनों में परिवर्तन हुआ। इसमें मुख्यतः खाद्य तेल, दूध उत्पाद और चाय तथा काफी का मुख्य योगदान था जो कि यह दर्शाते हैं कि प्राथमिक खाद्य मूल्यों में पहले हुई वृद्धि का प्रभाव विनिर्मित खाद्य मूल्य पर अंतराल से हुआ है।

लगभग सामान्य रहे मानसून से भी खाद्य मुद्रास्फीति का दबाव कम नहीं होगा

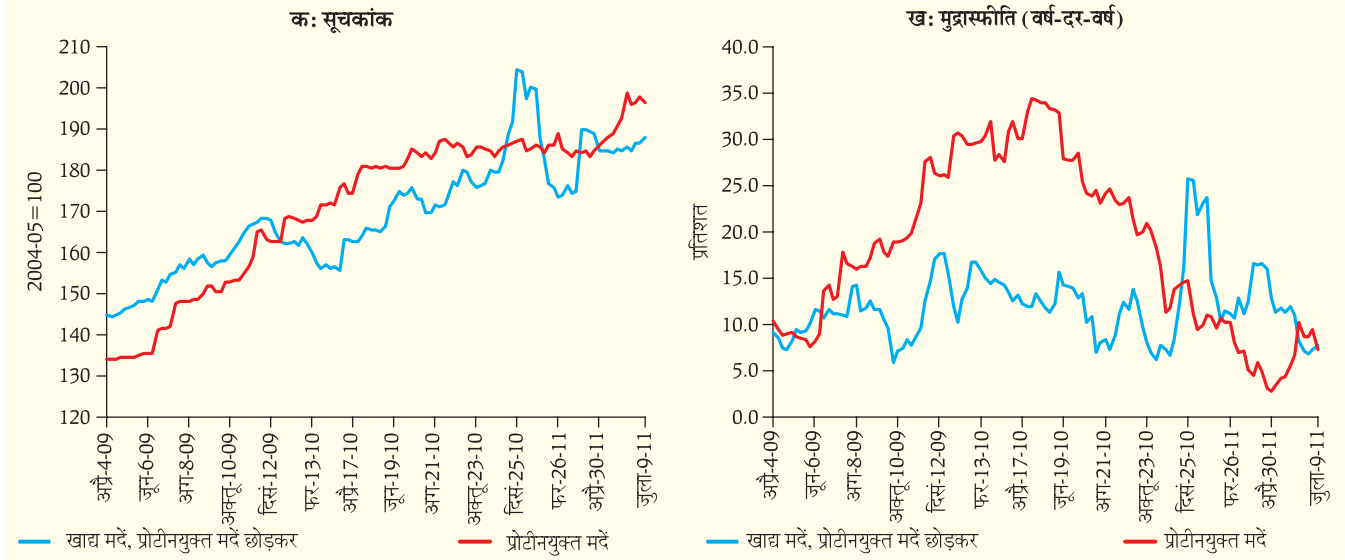
VI.15 लगभग सामान्य मानसून से सामान्यतः खाद्य मर्दों के मूल्यों पर अनुकूल प्रभाव होने की संभावना होती है किंतु खाद्य मुद्रास्फीति में कुछ जोखिम उभरी है। प्रमुख कृषि पण्यों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में हाल में की गयी वृद्धि, हालांकि इसका लक्ष्य उत्पादकों को मूल्य जोखिम से बचाना है, स्फीतिकारी प्रभाव को कुछ प्रभावित कर सकती है। यह देखा गया है कि खाद्य मर्दों के मूल्यों की प्रवृत्ति एमएसपी में वृद्धि का अनुसरण करती है जिसमें एमएसपी बाजार मूल्यों के लिए आधार प्रदान करती है (चार्ट IV.10)।

IV.16 लागत-प्लस मूल्यन दृष्टिकोण से एमएसपी में संशोधन आवश्यक हो जाता है अतः निविष्टि लागत और ग्रामीण वेतन से खाद्य मुद्रास्फीति के अनुमानित पथ की जानकारी मिलती है। ग्रामीण क्षेत्रों में वेतन बढ़ने से मांग और आपूर्ति पक्ष से खाद्य मूल्यों पर दबाव आता है। जहां वेतन में वृद्धि होने से कृषि उत्पादन की लागत बढ़ती है, वहीं उच्च वेतन आय से क्रय शक्ति बढ़ती है जिससे मांग में वृद्धि होती है और इससे मूल्यों में भी वृद्धि होती है। यह देखा गया कि

चार्ट VI.8: प्राथमिक खाद्य और विनिर्मित खाद्य मुद्रास्फीति (वर्ष-दर-वर्ष)



चार्ट VI.9: प्राथमिक खाद्य मदे : सूचकांक और मुद्रास्फीति



2010-11 के दौरान ग्रामीण अकुशल श्रमिकों के वेतन में वृद्धि मूल्यों में वृद्धि की तुलना में काफी अधिक थी (राज्य-वार सीपीआई-ग्रामीण श्रमिक मुद्रास्फीति) जो उच्च वेतन से मूल्यों पर और दबाव बढ़ने की संभावना दिखती है (चार्ट IV.11)।

IV.17 2011-12 की ति1 के दौरान, कपास के अनुकूल उत्पादन और अंतरराष्ट्रीय मूल्यों में कमी आने के कारण खाद्येतर प्राथमिक मदों के मूल्यों में गिरावट हुई। विनिर्मित खाद्येतर उत्पादन मुद्रास्फीति में हाल के महीनों में वस्त्र मद से काफी योगदान रहा जिसका आधार कच्ची कपास और रेशों के मूल्यों में पहले की गयी वृद्धि में है। किंतु कपास के मूल्य कम होने की हाल की प्रवृत्ति से वस्त्र संबंधी मुद्रास्फीति भी कम हो सकती है। खनिज समूह के बीच कच्चे पेट्रोलियम का सूचकांक अप्रैल 2011 के दूसरे सप्ताह से 34.4 प्रतिशत बढ़ाया गया जो कि देशी कच्चे तेल के मूल्यों में पहले की गयी वृद्धि की विलंबित रिपोर्टिंग दर्शाता है। इससे डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति में लगभग 0.4 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई।

सीपीआई और डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति मूल्य दबाव के विस्तार से प्रभावित हुई

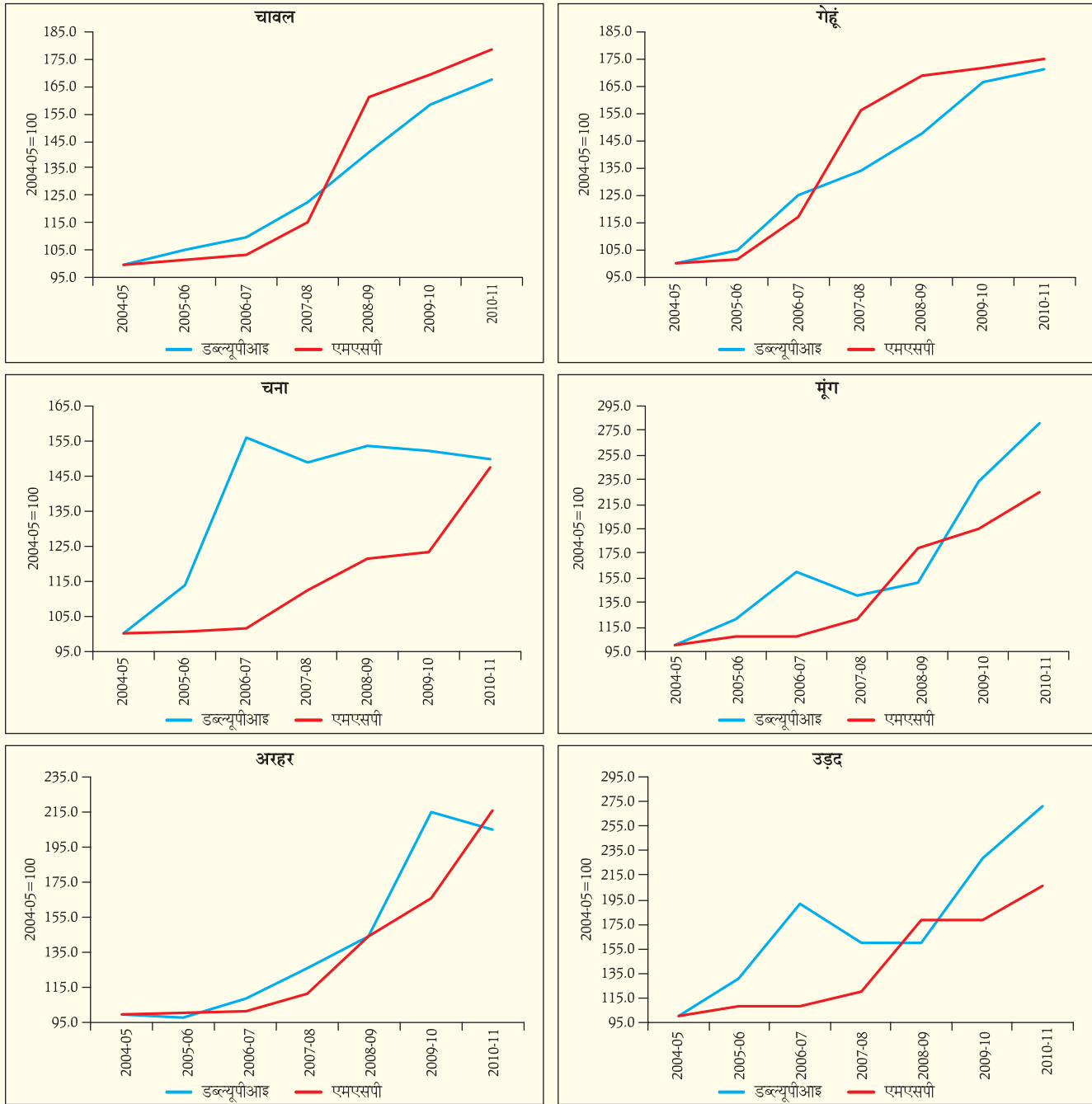
IV.18 सीपीआई मुद्रास्फीति के विभिन्न उपाय मई/जून 2011 में 8.7-9.3 प्रतिशत के दायरे में रहे। सीपीआई मुद्रास्फीति के विभिन्न उपायों का डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति से हुआ समरूपण खाद्य मूल्यों में गिरावट और खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति में वृद्धि दर्शाता है (चार्ट IV.12)।

VI.19 संयुक्त अखिल भारतीय सीपीआई के साथ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए लागू की गयी नयी सीपीआई से पता चलता है कि मूल्य दबाव निरंतर बना रहा जिसमें जून 2011 (आधार: 2010=100) के लिए अद्यतन रीडिंग 108.8 (अनंतिम) थी। जनवरी 2011 से "ग्रामीण", "शहरी" और "संयुक्त" के लिए लागू किया गया यह नया उपभोक्ता मूल्य सूचकांक मूल्य सांख्यिकी में सुधार की एक महत्वपूर्ण पहल है। नया सीपीआई देशभर का मूल्य सूचकांक उपलब्ध कराता है जो कि कवरेज की दृष्टि से क्षेत्रों और साथ ही पण्य समूहों में अधिक समग्र है। नयी सीपीआई श्रृंखला और वर्तमान श्रृंखला के बीच की तुलना से पता चलता है कि जहां ग्रामीण और शहरी समूहों के लिए खाद्य समूह का भारांक काफी कम हो गया है, वहीं विविध समूह और विशेष रूप से सेवाएं, का हिस्सा बढ़ गया है। नये सीपीआई पर आधारित वर्ष-दर-वर्ष की मुद्रास्फीति के आंकड़े जनवरी 2012 से उपलब्ध हो जाने के कारण यह मुद्रास्फीति के उपायों के करीब होंगे जो कि मौद्रिक नीति संचालन के लिए अन्य देशों में सामान्य रूप से उपयोग में लाये जा रहे हैं। किंतु दीर्घकालिक समय श्रृंखला के आंकड़े, विशेष रूप से पिछली अवधि के लिए, इन नये सूचकांकों के लिए उपलब्ध नहीं होंगे जिससे अल्पावधि संदर्भ में नीतिगत विश्लेषण के लिए इन आंकड़ों की उपयुक्तता सीमित हो जाती है।

संरचनात्मक बाधाओं के कारण मुद्रास्फीति में क्रमिक रूप से कमी आ सकती है

VI.20 उच्च मुद्रास्फीति की निरंतरता और मूल्य दबावों में विस्तार के उत्तरस्वरूप रिजर्व बैंक ने मुद्रास्फीति-नियंत्रण पर विशेष बल दिया।

चार्ट VI.10: न्यूनतम समर्थन मूल्य और थोक मूल्य सूचकांक

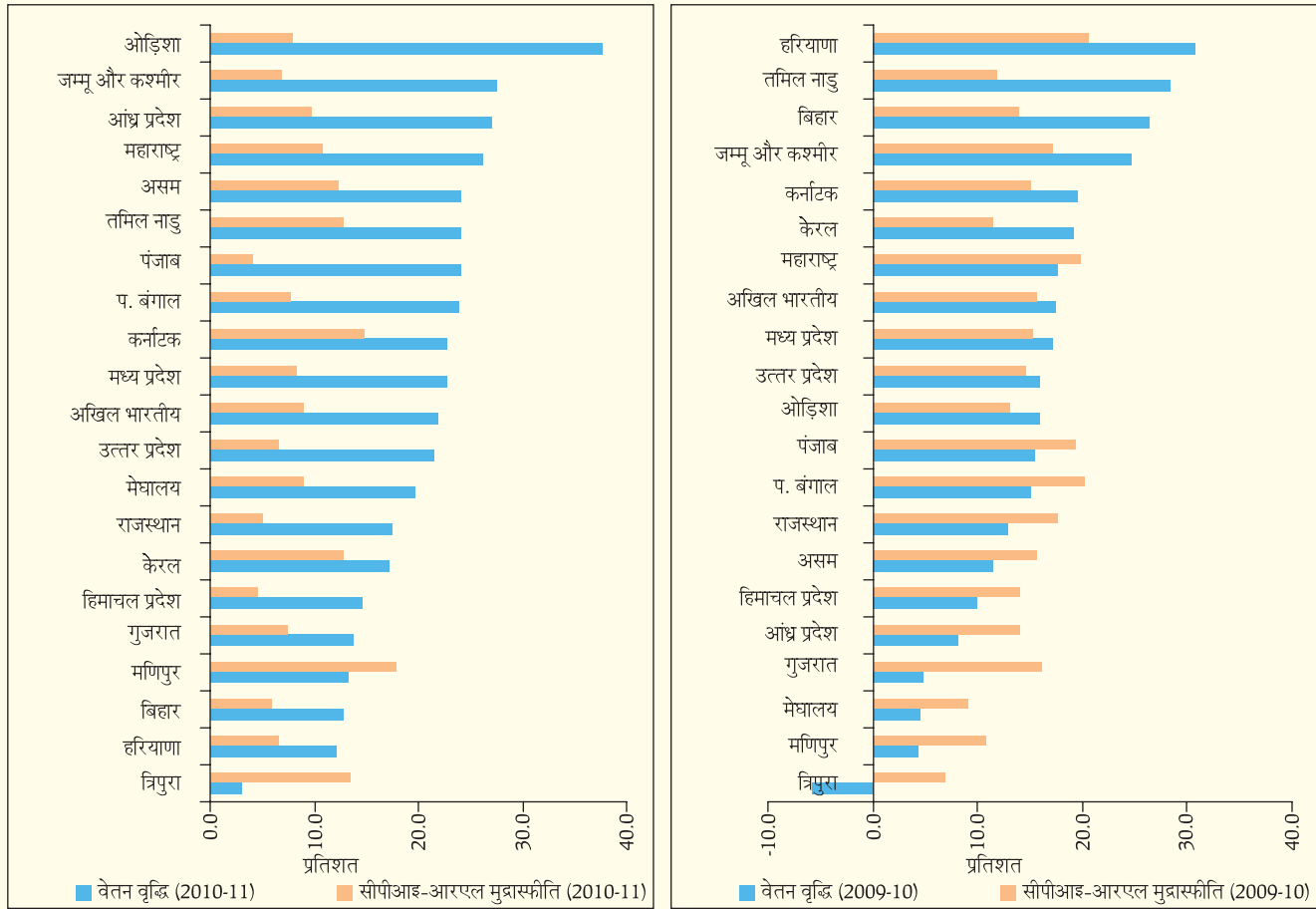


किंतु मांग में अपेक्षित कमी के कारण स्फीति-विरोधी उपायों के प्रभाव को पण्य मूल्य और वेतन-मुद्रास्फीति, जिससे मूल्य दबाव पर निरंतर दबाव आता है, के प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है। वैश्विक पण्य मूल्यों में कमी आना अस्थायी हो सकता है। यदि उन्नत देशों का निभावी मौद्रिक नीति रुझान जारी रहता है तो पण्य मूल्य दबाव उभर सकते हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्यों और ग्रामीण वेतन की हाल की प्रवृत्ति से पता चलता है कि खाद्य मुद्रास्फीति पर उनके अनुकूल प्रभाव के

कारण लगभग सामान्य रहे मानसून से भी खाद्य मुद्रास्फीति अधिक कम नहीं होगी।

VI.21 राजकोषीय घाटे के लक्ष्य में वृद्धि होने की संभावना के चलते मांग पर इसका विस्तारी प्रभाव स्फीति-विरोधी मौद्रिक कार्रवाई से उभरने वाली मांग में कमी को आंशिक रूप से प्रभावित करके मौद्रिक नीति के प्रभाव को कम कर सकता है। अनेक महीनों तक उच्च रही मुद्रास्फीति से अनेक महत्वपूर्ण पण्यों में मूल्य से प्रभावित आपूर्ति

चार्ट VI.11: सीपीआइ ग्रामीण श्रमिक मुद्रास्फीति और वेतन वृद्धि*



* मार्च में वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि, ग्रामीण अकुशल श्रमिक (पुरुष) वेतन ।
स्त्रोत : श्रम ब्यूरो, श्रम मंत्रालय ।

प्रतिसाद नहीं हुए; इसके स्थान पर निविष्टि लागत दबाव उत्पादन मूल्यों तक बढ़ गये। इन प्रवृत्तियों से आपूर्ति प्रतिसाद बढ़ाने के लिए

संरचनात्मक सुधार आवश्यक हो गये और मौद्रिक नीति के स्फीति-विरोधी विचार से मुद्रास्फीति आशंकाओं में ठहराव आया।

चार्ट VI.12: डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ मुद्रास्फीति (वर्ष-दर-वर्ष)

